पार्ट 3

प्रश्न 15. रस निष्पत्तिक प्रसंग आचार्यलोकनिक विचारसँ अवगत कराउ।

उत्तर :– रसक शाब्दिक अर्थ होइछ जकर आस्वादन कएल जाए सकए *रस्यते इति रसः।* प्राचीन वाङमयमे रस शब्दक विभिन्न अर्थमे प्रयोग प्राचीन कालसँ होइत आएल अछि। सर्वप्रथम ऋग्वेद आ आन वैदिक साहित्यमे ई शब्द जलसार (यथा रसेन ससगंस्महि ऋग्वेद) सोमरूप (यथा सोम इन्द्रियो रस ऋग्वेद) गोदुग्ध (यथा जम्मे रसस्यवावृषे) लतादिक निचोड़ वा सर एवं पेय, द्रव्य, वीर्य, स्वाद, विष, मधुर, तिक्तादिष्ट्रस, सुरा, शोणित पारद, वाक्–रस, परमात्मा आदि अनेक अर्थमे प्रयुक्त भेटैत अछि।

रस–निष्पत्ति– आचार्य भरतमुनिक रस सूत्रक व्याख्याकारक रूपमे चारि टा आचार्य सर्वाधिक उल्लेख्य एवं हिनका लोकनिक मत सर्वाधिक आदृत अछि। ओ आचार्य छथि भट्टलोल्लट, भटशंकुक, भट्टनायक, आचार्य अभिनवगुप्त। एहि चारि आचार्यक मत क्रमशः उत्पत्तिवाद वा आरोपवाद, रूपमे विद्वत्‌ण्डली मध्य प्रचलित अछि।

भट्टलोल्लटक उत्पत्तिवाद वा आरोपवाद भारतीय काव्यशास्त्र मे सर्वप्रथम रस क विवेचन आचार्य भरत मुनि अपन ग्रन्थ नाटयशास्त्रमे स्पष्ट कहने छथि नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते। भरत मुनिक एहि सूत्रक प्रथम व्याख्याता भेलाह भट्टलोल्लट। ई मीमांसक छलाह आओर ते मीमांसा शास्त्रक अनुसारे ई उपर्युक्त सूत्रक व्याख्या कयने छथि। यद्यपि हिनक कोनो ग्रन्थ उपलब्ध नहि अछि, मात्र अभिनवगुप्त द्वारा प्राप्त उद्धरणेक आधार पर हिनक मतक अनुमान कयल जाइत अछि।

भट्टलोल्लटक अनुसार नाटक देखलापर दर्शकलोकनिके जे आनन्दक अनुभव होइत छनि से नट, नायकमे तुल्यताक अनुसन्धान एवं तत्पश्चात् कयल गेल आरोपक कारणहिसँ सम्भव होइत अछि नटे तु तुल्यरूपतानुसन्धानवशात् आरोप्यमाणः समाजिकानां चमत्कारहेतुः।

भट्टलोल्लटक अनुसार निष्पत्तिक अर्थ होइत अछि उत्पत्ति आओर ते हिनक अनुसार रस उत्पत्ति मूल रूपसँ ऐतिहासिक पात्र, यथा राम, सीता आदि होइत अछि। अभिनय करबा काल दर्शकलोकनि अनुकर्त्ता (अभिनेता के अनुकार्य) (मूलनायक श्रीराम) बूझि लैत छथि वा दोसर शब्दमे अनुकर्त्तेमे अनुकार्यक आरोप क लैत छथि। जहिना शुक्तिकामे रजत नहियो रहला पर जँ केओ ओकरा भ्रमसँ रजत रूपमे देखैत अछि तँ ओकरा देखि अत्यन्त पुलकित भ जाइत अछि तथा ओकरा ल लेबाक हेतु प्रवृत्त होइत अछि, तहिना दुष्यन्तनिष्ठ रतिभाव

Scanned by CamScanner

ओहि नट वा अभिनेतामे वास्तविक नहियो रहनहुँ भ्रमसँ वास्तविक रूपमे बूझि सामाजिक ओहिसँ आनन्दित भ जाइत छथि।

भट्टलोल्लटक अनुसार विभाव अनुभाव एवं व्यभिचारी भावक संयोगसँ रस उत्पन्न होइत अछि। हिनक अनुसार स्थायी भाव विभावक संग उत्पाद्य–उत्पादक भाव संबंधसँ रस उत्पन्न होइत अछि। गम्य– गमक भाव सम्बन्धसँ ओकर अनुभूति करबैत अछि तथा व्यभिचारीक भाव पोष्य–पोष्क भाव सम्बन्धसँ ओकरा रस रूपमे पुष्ट करैत अछि। भट्टलोल्लटक उपर्युक्त मतमे कतोक प्रकारक दोष अछि।

शंकुकक अनुभूतिवाद वा अनुमानवादः भट्टलोल्टक आरोपवादक दोषक निराकरणक हेतु शंकुक अनुमितिवादक जन्म देलनि हिनको ग्रन्थ उपलब्ध नहि अछि तथा हिनक मत अभिनय भारती, ध्वन्यालोक लोचन एवं काव्य प्रकाश आदिमे उद्धत अछि।

शंकु नैयायिक छलाह आओर ते हिनक मत न्यायशास्त्र पर आधारित अछि। हिनक अनुसार भरतक रस सूत्रक संयोगात् शब्दक अर्थ अछि अनुमान्य अनुमापक सम्बन्धात एवं निष्पत्ति शब्दक अर्थ अछि अनुमितिः। एहि अनुमितिक आधार पर हिनक मत अनुमितिवाद वा अनुमानवाद कहौलक।

शंकुक मान्यता अछि जे नटमे अनुकार्यक आरोप नहि कयल जाइछ अपितु चित्र–तुरंग न्यायसँ हुनक अनुमान क लेल जाइत अछि। चित्र तुरंग न्यायक अर्थ होइछ बच्चा जकाँ घोड़ाक चित्रके वास्तविक घोड़ा बूझि लेब। दर्शक लोकनि अभिनयमे ततबा तन्मय भ जाइत छथि जे ओ नटके वास्तविक राम बूझि रसानुभूति कर लगैत छथि।

हिनकासँ पूर्वक आचार्य भट्टलोल्लट तीन प्रकारक सम्बन्ध माननें छलाह उत्पाद्य उत्पादक गम्य गमक एवं पोष्य पोषक सम्बन्ध मुदा श्री शंकुक एके टा सम्बन्ध माननें छथि अनुमाप्य अनुमापक सम्बन्ध। एकर अभिप्राय ई अछि जे विभाव, अनुभाव एवं संचारी भाव तीनू रसक अनुमापक अछि एवं रस ओकर अनुमेय–अनुमितिक योग्य। ई अनुमिति ज्ञाने दर्शकलोकनिक रसास्वादक कारण बनैत अछि। ई अनुमिति ज्ञान लोकप्रसिद्ध चारि प्रकारक ज्ञान सम्यक ज्ञान, मिथ्या ज्ञान, संशय ज्ञान, सादृश्य ज्ञान (ई रस्सी साँपहिक सदृश अछि) सँ विलक्षण चित्र तुरंग प्रतीतिक सदृश होइत अछि।

Scanned by CamScanner

सारांश ई जे कोनो स्थानमे वास्तविक घूम नहियो रहने घूम बूझि लेला पर जेना घूम–नियत बहिक अनुमान होइत अछि तहिना नटमे वास्तविक विभावादिसँ रतिक अनुमान होइत अछि आओर ओ अनुमित रति अपन सौन्दर्यक प्रसादात् दर्शक सामाजिक लोकनिमे आस्वाद्यमान भ चमत्कार उत्पन्न करैत रसत्वके प्राप्त करैत अछि। इएह रसानुमिति रस निष्पति अछि।

शंकुकक उपर्युक्त मत सेहो सर्वथा दोषमुक्त नहि अछि। गंभीरतापूर्वक विचार कएला पर ई स्पष्ट होइछ जे अनुमिति कखनहुँ सम्पूर्णतः आनन्दप्रद नहि भ सकैछ कारण लङुक चित्रके देखि ओकर स्थितिक अनुमान तँ कयल जा सकैत अछि, किन्तु ओ अनुमान लङु खयबाक तृप्ति प्रदान नहि क सकैछ। आनन्द अनुमानमे नहि प्रत्यक्ष अनुभूतिमे निहित अछि। अनुमानक स्वतः ध्वनित होइत अछि। ते दर्शकके पूर्ण आनन्द प्राप्त नहि भ सकैत छन्हि।

भट्ट नायकक भुक्तिवाद वा भोगवादः भरतसूत्रक तेसर व्याख्याता आचार्य भट्टनायक सांख्यमतानुयायी छलाह आओर ते हिनक रस विवेचन सांख्या दर्शनानुकूल अछि। हिनक अनुसार भरतक रस सूत्रक संयोगातक अर्थ अछि भावनात् एवं निष्पत्ति क अर्थ अछि भुक्ति।

भट्टनायक, भट्टलोल्लटक आरोप एवं शंकुकक अनुमिति क विरोध करैत एकटा नव काव्य क्रियाक कल्पना कयने छथि आओर से अछि भोजकत्व। एहि व्यापार द्वारा ओ रसानुभव मानने छथि। एहि व्यापारसँ पहिने ओ दुइटा आओर व्यापार मानने छथि अभिधा एवं भावना वा भावकत्व, व्यापार अभिधा व्यापार, अर्थ विषयक, भावकत्व व्यापार रसादि विषयक एवं भोकत्व व्यापार सहृदय विषयक, होइत अछि। अभिधासँ अर्थ ज्ञानक पश्चात् भावकत्व व्यापार साधारणीकरणक स्थिति अछि। एकर फलस्वरूप सामाजिक दर्शक नाटकक पात्रके विशिष्ट व्यकित नहि बूझि अपने सदृश स्त्री पुरूष बुझैत छथि। भावकत्वसँ साधारणीकरणक द्वारा रसादिक भक्ति भ गेला पर भोजकत्व रूप तृतीय व्यापारसँ सहृदय ओहि भावित रसक भोग करैत छथि। इे भोग वा अस्वाद अनुभव एवं स्मृतिसँ सर्वथा विलक्षण होइत अछि। ई भोग वा अस्वाद अनुभव एवं स्मृतिसँ सर्वथा विलक्षण होइत अछि एवं चित्तक द्रुति, विस्तार एवं विकास रूप होइत अछि। ई सत्वमय, निज चेतन स्वरूप, आनन्दमय, ब्रह्मानन्द सहोदर होइत अछि।

Scanned by CamScanner